

Dr. (Mrs.) Janak Palta McGilligan

Dr. (Mrs.) Janak Palta McGilligan is a social worker, social scientist and a committed environmentalist. She has been serving rural India for the last 30 years.

2. Born on 16 February 1948 , Dr. McGilligan completed Masters in English in 1972, Political Science in 1976 and M.Phil. in Political Science with distinction from Punjab University Chandigarh in 1981. She did her Ph.D. from Devi Ahilya University, Indore in 2004.

3. Dr. McGilligan resigned as a research fellow from the Centre for Research in Rural and Industrial Development, Chandigarh and moved to Indore as a Bahai pioneer to establish the 'Barli Development Institute for Rural Women'. During her 26 years service as Director of this Institute, she empowered more than 6000 young tribal and rural women, mostly illiterate, socially and economically deprived from 500 villages of Madhya Pradesh, Chhattisgarh & other states of India. She handed over the institute to her successor in 2011 after developing and running the institute's 100 residential training courses and considerable academic and research work which includes development of 8 curriculum books. She is the Founder Editor of monthly newsletter for neo-literates, tribal and rural women - 'Kokila', which was started by her in 1993 and later renamed 'Barli Ki Duniya'. The newsletter continues to be circulated among all the Barli Graduates.

4. Dr. McGilligan contributed to successful eradication of guinea worms from 302 guinea-worm affected villages in Jhabua district to train locals combat the disease all those villages by spending around 302 days and nights there in 1987-88. UNEP recognized this work by conferring 'Global 500 Roll of Honor' to the Barli Institute in 1992 during the Earth Summit in Rio de Janeiro.

5. After demise of her husband, Dr. McGilligan moved to Sanawadiya village in June 2011 and carried on the mission. She started working with 50 tribal landless families for their empowerment. Living with an adopted tribal family of four, she converted her house into Jimmy McGilligan Centre for Sustainable Development. She has educated more than 20,000 people in sustainability and herself practices sustainable living, growing and eating organic food, using solar kitchen, solar dryers, solar water heaters, solar charged radio, mobile phone and computer. She inspires and promoted tree plantation, organic food, solar food processing, works for Cancer patients and continues research and promotion of transfer of sustainable technologies.

6. Dr. McGilligan's services have been recognized by the Government and several NGOs. In 2001, she received 'Outstanding Woman Social Worker Award'; 'Rashtriya Ambedkar Sahitya Samman' and 'Empowerment of Rural and Tribal Women Award'. In 2005, she received the 'Mahila Samaj Sevi Samman', and in 2006, 'Service to Tribal Women Award'. In 2008, Madhya Pradesh Government presented her 'Rajmata Vijayaraje Scindia Social Service Award'. In 2010, she received the 'Lakshmi Menon Literacy Award' and in 2011, the 'Innovative Social Educators Award'. In 2012, 'Life Time Achievement Award' and in 2013 the 'Woman of Substance Award' as well as 'Harmony Award'.



डॉ.(श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन

डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन, एक सामाजिक कार्यकर्ता, समाज-विज्ञानी तथा एक समर्पित पर्यावरणविद् है। आप विगत 30 वर्षों से भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं।

2. आपका जन्म फरवरी 16, 1948 को हुआ। आपने वर्ष 1972 में अंग्रेजी विषय, वर्ष 1976 में राजनीति-विज्ञान से स्नातकोत्तर तथा वर्ष 1981 में पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से विशिष्टता के साथ राजनीति-विज्ञान में एमफिल की डिग्री हासिल की। आपने वर्ष 2004 में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से अपनी पीएच.डी पूरी की।

3. ग्रामीण एवं औद्योगिक विकास अनुसंधान केन्द्र, चंडीगढ़ में शोध-फैलो पद से त्यागपत्र देकर आप 'बार्ली डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट फॉर रूरल वूमन' स्थापित करने एक बहाई पथप्रदर्शक के रूप में इंदौर आ गईं। इस संस्थान के निदेशक के तौर पर अपनी 26 वर्ष की सेवा के दौरान आपने 6000 से अधिक युवा आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं को प्रेरित करके उन्हें सबल बनाया है, जिनमें से अधिकांश मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और भारत के अन्य राज्यों के 500 गांवों से सर्वाधिक निरक्षर तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े परिवेश से आती हैं। वर्ष 2011 में आपने संस्थान में 100 आवासीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के विकास और संचालन तथा 8 पाठ्यक्रम पुस्तकें तैयार करने सहित उल्लेखनीय शैक्षणिक और शोध-कार्य करने के पश्चात् वर्ष 2011 में आपने संस्थान का दायित्व अपने उत्तराधिकारी को सौंप दिया। आप नव-साक्षर आदिवासी एवं ग्रामीण महिलाओं के लिए मासिक न्यूज़लैटर, 'कोकिला' की संस्थापक संपादक हैं, जिसे आपने वर्ष 1993 में प्रारंभ किया था तथा बाद में इसका नाम बदलकर 'बार्ली की दुनिया' कर दिया था। यह न्यूज़लैटर अभी भी बार्ली स्नातकों को दिया जाता है।

4. आपने गिनी-कृमि (गिनिया वर्म) से प्रभावित झाबुआ जिले के 302 गांवों से गिनी-कृमि के सफल उन्मूलन में अपना योगदान दिया तथा वर्ष 1987-88 में उन गांवों में 302 दिनों तक रहकर स्थानीय लोगों को इस मुकाबला करने का प्रशिक्षण दिया। यू एन ई पी ने आपके कार्य की सराहना करते हुए वर्ष 1992 में रिओ डि जेनेरियो में पृथ्वी-सम्मेलन के दौरान बार्ली संस्थान को 'ग्लोबल 500 रॉल ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया।

5. जून, 2011 में आप पति के निधन के पश्चात सनवडिया गांव आ गईं तथा मिशन को जारी रखा। आपने 50 आदिवासी भूमिहीन परिवारों के सशक्तिकरण के लिए काम करना आरंभ किया। गोद लिए गए चार व्यक्तियों के आदिवासी परिवार के साथ रहकर आपने अपने घर को जिम्मी मैक्गिलिन सेन्टर फॉर सस्टेन्बल डेवलपमेंट का रूप दे दिया। आपने प्रकृति पर निर्भरता के क्षेत्र में 20,000 से अधिक लोगों को शिक्षित किया और स्वयं भी प्रकृति आधारित जीवनयापन, आर्गेनिक वस्तुएं उगाने तथा खाने, सौर रसोई, सौर ड्रायर, सौर वॉटर हीटर, सौर ऊर्जा से चार्ज किए गए रेडियो, मोबाइल फोन और कंप्यूटर का प्रयोग करती हैं। आप जैव-खाद्य पदार्थ को लगाने, आर्गेनिक खाद्य पदार्थ, सौर खाद्य प्रसंस्करण को प्रेरित और प्रोत्साहित करती हैं। आप कैंसर रोगियों के लिए काम करती हैं तथा धारणीय प्रौद्योगिकियों के अन्तरण के क्षेत्र में शोध और प्रोत्साहन दिए जाने संबंधी कार्य को जारी रखी हुई हैं।

6. आपकी सेवाओं को सरकार तथा अनेक गैर-सरकारी संगठनों से मान्यता मिली है। वर्ष 2001 में आपको 'उत्कृष्ट महिला सामाजिक कार्यकर्ता पुरस्कार', 'राष्ट्रीय अम्बेडकर साहित्य सम्मान' और 'ग्रामीण एवं जनजातीय महिला सशक्तिकरण पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वर्ष 2005 में आपको 'महिला समाज सेवी सम्मान' तथा वर्ष 2006 में 'जनजातीय महिला सेवा पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वर्ष 2008 में मध्य प्रदेश सरकार ने आपको 'राजमाता विजयराजे सिंधिया समाज-सेवा पुरस्कार' से सम्मानित किया। वर्ष 2010 में आपको 'लक्ष्मी मेनन साक्षरता पुरस्कार', वर्ष 2011 में 'नवोन्मुखी सामाजिक शिक्षक पुरस्कार', वर्ष 2012 में 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' तथा वर्ष 2013 में 'सौहार्दता पुरस्कार' के साथ-साथ 'वूमन ऑव सब्सटेंस अवॉर्ड' भी प्राप्त हुआ।